بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 17 अप्रेल 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.
(शहादत महीने की तिथि 17,1405 हश)

सच्चाई के हवाले से आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरते मुबारका का ईमान अफ़रोज़ तज़किरा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 17.04.2026
محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशहहुद, तअव्वुज़ और सूर: फ़ातिहा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने सूर: यूनुस की आयत 17 और 18 की तिलावत की, जिसके बाद फ़रमाया: -इन आयतों का तर्जुमा यह है कि और तू उनसे कह, कि अगर अल्लाह की यही मशीयत होती कि इसकी जगह कोई और तालीम दी जाती, तो मैं इसे तुम्हारे सामने पढ़कर न सुनाता और न वो तुम्हें इस तालीम से आगाह करता। चुनाँचे इससे पहले मैं तुम में एक लंबा अर्सा गुज़ार चुका हूँ, क्या फिर भी तुम अक़्ल से काम नहीं लेते? फिर तुम ही बताओ कि जो अल्लाह पर बुहतान बाँधे या उसके निशानों को झुठलाए, उससे बढ़कर कौन ज़ालिम होगा? ग़रज़ यह यक़ीनी बात है कि मुजरिम लोग कामयाब नहीं होते।
आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलुओं का ज़िक्र हो रहा है। आज आप स. के ख़ुल्क-ए-सदाक़त यानी सच्चाई और रास्तबाज़ी के बारे में ज़िक्र होगा।

आप स. की सीरत के वाक़िआत में आपकी सच्चाई की आला तरीन मिसालें मिलती हैं। दुश्मन भी आप स. की रास्तबाज़ी के आला तरीन मेयार (स्तर) का इक़रार किए बग़ैर नहीं रह सकता। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने मानने वालों को भी यही नसीहत फ़रमाई है कि सच्चाई के आला तरीन मेयार क़ायम करो। पस आज इस हवाले से हम सबको अपने-अपने जाइज़े लेने की ज़रूरत है। यही सच्चाई के आला तरीन मेयार हैं जो हमारी ज़िंदगी के हर लम्हे में कामयाबी की ज़मानत हैं और इसी तरह हमारे लिए तबलीग़ के रास्ते भी खोलने वाले हैं।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पाक ज़िंदगी का तज़किरा करते हुए हज़रत मुसलह मौऊद रज़ि. ने एक जगह फ़रमाया है कि हम रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में देखते हैं कि आप स. के दुश्मनों ने भी इक़रार किया कि आप स. सादिक़ व अमीन

थे और उन्होंने कोई इल्ज़ाम न लगाया। दुश्मन ने भी आप स. की सच्चाई और पाकीज़गी की गवाही दी।

फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वो कौन-सी चीज़ थी जो मुख़ालिफ़ीन पर असर करती थी? वो क़ुरआन करीम से इब्तिदाई तौर पर मुतअस्सिर (प्रभावित) नहीं हुए, बल्कि वो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली ज़िंदगी थी, आप स. उनमें रहे, आप स. की दियानत (ईमानदारी) रास्तबाज़ी, हमदर्दी-ए ख़लाइक़ और ईसार (कुर्बानी) यह वो चीज़ें थीं जो उन पर असर करती थीं। दावे से पहले आप स. उन्हें शिर्क से मना नहीं करते थे क्योंकि हुक्म-ए-ख़ुदावंदी नहीं था, मगर आप स. ख़ुद मुश्रिक न थे। पस आप स. के तौर-तरीक़े की ख़ूबी ही थी जिसका असर था और यह असर अंदर ही अंदर खाता जाता था।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला ने हमारे सैयद व मौला, नबी आख़िरुज़्ज़माँ, जो सैयदुल मुत्तक़ीन थे, को अनवाअ व अक़साम (विभिन्न प्रकार) की ताईदात से मुज़फ़्फ़र व मनसूर (सफल) किया। गो इब्तिदा में हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरह दाग़-ए-हिजरत आप स. को भी नसीब हुआ, मगर वही हिजरत फ़त्ह व नुसरत के मबादी अपने अंदर रखती थी। सो ऐ दोस्तो! यक़ीनन समझो कि मुत्तक़ी कभी बरबाद नहीं किया जाता। जब दो फ़रीक़ आपस में दुश्मनी करते हैं और ख़ुसूमत (विरोध) को इंतिहा तक पहुँचाते हैं, तो वो फ़रीक़ जो अल्लाह तआला की नज़र में मुत्तक़ी और परहेज़गार होता है, आसमान से उसके लिए मदद नाज़िल होती है। इस तरह आसमानी फ़ैसले से मज़हबी झगड़े इन्फ़िसाल (निर्णय) पा जाते हैं।

फ़रमाया: अल्लाह जल्ल शानुह हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुख़ातिब करके फ़रमाता है कि وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ यानी तू एक बुज़ुर्ग ख़ुल्क़ पर क़ायम है। यानी तमाम क़िस्म के अख़लाक़ (नैतिकता) तुझ में जमा हैं। ग़रज़ जितनी भी इंसान के दिल में क़ुव्वतें पाई जाती हैं, तमाम तबई हालतें अक़्ल और तदब्बुर के मशवरे से अपने-अपने मक़ाम पर ज़ाहिर की जाएँ, तो उन सबका नाम अख़लाक़ होगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सच्चाई को दुनिया में फैलाने के लिए आए थे, इसलिए मुख़्तलिफ़ अवसरों पर आप स. ने अपने मानने वालों को भी सच्चाई इख़्तियार करने की तलक़ीन फ़रमाई। एक मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम पर सच फ़र्ज़ है, क्योंकि सच नेकी की तरफ़ ले जाता है और नेकी जन्नत की तरफ़ ले जाती है। कोई शख़्स मुसलसल सच बोलता है और सच की जुस्तजू में लगा रहता है यहाँ तक कि वो अल्लाह के यहाँ सिद्दीक़ लिखा जाता है। तुम लोग झूठ से बचो, क्योंकि झूठ बदकारी की तरफ़ ले जाता है और बदकारी आग की तरफ़ ले जाती है। आदमी झूठ बोलता चला जाता है यहाँ तक कि वो अल्लाह के यहाँ कज़्ज़ाब लिखा जाता है।

एक और मौक़े पर आप स. ने फ़रमाया कि बेशक झूठ किसी हाल में दुरुस्त नहीं — न संजीदगी में और न मज़ाक़ में। और न यह कि कोई शख़्स अपने बच्चे से वादा करे और उसे पूरा न करे।

अल्लामा राज़ी रह. सूरतुत्तौबा आयत 119 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं: एक शख़्स नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और उसने कहा कि मैं ऐसा शख़्स हूँ जो चाहता है कि अपनी बुराइयों से बचे, लेकिन मुझ में शराब, चोरी, ज़िना और झूठ की आदतें बहुत ज़्यादा पाई जाती हैं। लोग कहते हैं कि आप स. इन चीज़ों को हराम क़रार देते हैं। मुझ में पूरी ताक़त नहीं कि मैं

इन सबको छोड़ सकूँ। अगर आप स. एक पर क़नाअत करें (काफ़ी समझें) तो मैं आप स. पर ईमान ले आऊँगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ठीक है, तुम झूठ को छोड़ दो। उसने झूठ छोड़ने का क़ौल (वचन) कर लिया और मुसलमान हो गया। फिर जब वो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास से निकला तो उसे उन तमाम बुराइयों के मवाक़िअ पेश आए और इस ख़याल से कि अगर वो उन बुराइयों में मुब्तला हुआ और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे पूछा तो उसे सच बोलना होगा, इस तरह वो उन सब बुराइयों से बचता चला गया।

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दावा-ए-नबुव्वत पहुँचा, तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आए और अर्ज़ की कि मुझे आप स. के बारे में एक बात पहुँची है। आप स. ने फ़रमाया: ऐ अबूबकर! तुम्हें मेरे बारे में क्या बात पहुँची है? हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की: यही कि आप स. लोगों को अल्लाह की तौहीद की तरफ़ बुलाते हैं और कहते हैं कि आप स. अल्लाह के रसूल हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ! मेरे ख़ुदा ने मुझे बशीर और नज़ीर बनाया है और मुझे इब्राहीम की दुआ बनाया है और मुझे तमाम इंसानों की तरफ़ मबऊस (भेजा) किया है। हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: अल्लाह की क़सम! मैंने कभी आप स. को झूठ बोलते नहीं देखा। आप स. अपनी अमानत की अज़मत, सिला-रहमी और अच्छे आमाल की वजह से नबुव्वत के ज़्यादा हक़दार हैं। अपना हाथ बढ़ाएँ ताकि मैं आप स. की बैअत करूँ। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना दस्त-ए-मुबारक आगे किया और हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप स. की बैअत की।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आग़ाज़-ए-नुज़ूल-ए-वही के मौक़े पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अमानत व सदाक़त पर जो अज़ीमुश्शान कलिमात फ़रमाए, उनका ज़िक्र करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: ग़ौर करो कि पचपन साला बीबी आप स. की हमशहर, हमक़ौम, जो पंद्रह साल से आप स. के बियाह में है, क्या गवाही देती है। ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की गवाही ऐसे वक़्त में, जब आप स. ग़मगीन और मुज़्तरिब (व्याकुल) थे, ग़ौर के क़ाबिल है। अगर आप स. में यह सिफ़ात न होतीं तो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का बयान उस वक़्त हरगिज़ तसल्लीबख़्श न होता।

शेअब-ए-अबी तालिब में जब महसूरी का तीसरा साल होने को आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से ख़बर पाकर अपने चचा अबू तालिब को इत्तिला दी कि बनू हाशिम के बायकाट का जो मुआहिदा (समझोता) ख़ान-ए-काबा में लटकाया गया था, उसकी सारी इबारत को अल्लाह के ज़िक्र के सिवा दीमक खा गई है। हज़रत अबू तालिब को आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ौल पर ऐसा यक़ीन था कि उन्होंने अपने भाइयों से इस बात का ज़िक्र करते हुए कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आज तक मुझसे झूठ नहीं बोला। चुनाँचे वो इनके साथ सरदारान-ए-क़ुरैश के पास गए और उनसे कहा कि मेरे भतीजे ने मुझे यह बताया है और उसने मुझसे कभी झूठ नहीं बोला। पस अगर मेरा भतीजा सच्चा निकला तो तुम्हें अपने बायकाट के फ़ैसले से पीछे हटना होगा, और अगर वो झूठा निकला तो मैं उसे तुम्हारे हवाले कर दूँगा — चाहो तो उसे क़त्ल करो, चाहो तो ज़िंदा रखो। जब मुआहिदे को देखा गया तो वो ऐसे ही था जैसा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। चुनाँचे क़ुरैश अपनी क़ौम के सामने शर्मिंदा हो गए।

फ़रमाया: अबू जहल मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कितना बड़ा दुश्मन था। मगर उसने भी एक मौक़े पर कह दिया जो हज़रत मुसलह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि हम तुझको झूठा नहीं कहते, हम तो उस तालीम की तकज़ीब करते हैं जिसे तू पेश कर रहा है। गोया अबू जहल जैसा मुआनिद (दुश्मन) और स्याह-बातिन इंसान का दिल भी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झूठा कहने के लिए तैयार नहीं था। उमय्या इब्न ख़लफ़ भी आप स. का एक शदीद मुआनिद था, मगर एक मौक़े पर उसकी ज़बान से भी यह अल्फ़ाज़ निकल गए कि ख़ुदा की क़सम! जब मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बात करता है तो सच्ची ही करता है, झूठ नहीं बोलता। कहते हैं- जादू वो जो सर पर चढ़कर बोले। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कितना बड़ा जादू है कि आप स. ने अपने दुश्मनों से भी अपनी सिदाक़त और रास्तबाज़ी तसलीम करवा ली। मदीने के यहूदियों की भी गवाही मिलती है। मुसलमानों और यहूदी क़बीले बनू क़ुरैज़ा के दरमियान बाहमी तआवुन का मुआहिदा था। जंग-ए-अहज़ाब के दौरान बनू नज़ीर का सरदार हुयय्य इब्न अख़्तब बनू क़ुरैज़ा के सरदार काब इब्न असद क़रज़ी के पास गया और उसे मुसलमानों से मुआहिदा तोड़ने और क़ुरैश की मदद करने पर आमादा करने की कोशिश की, ताकि मुसलमानों को शिकस्त से दोचार किया जाए। इस मौक़े पर काब इब्न असद, जो बनू क़ुरैज़ा का सरदार और मुसलमानों का दुश्मन था, कह उठा: मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुआहिदा किया हुआ है और मैं हरगिज़ इस मुआहिदे को तोड़ने वाला नहीं हूँ, और मैंने आप स. से वफ़ादारी और सिदक़ के सिवा कुछ नहीं देखा।

एक मौक़े पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: मैं मज़ाह (मज़ाक़) ज़रूर करता हूँ, मगर उसमें भी सिर्फ़ सच्ची बात करता हूँ। इसी तरह फ़रमाया: हलाकत है उस शख़्स पर जो बात करता है और झूठ बोलता है ताकि इसकी वजह से लोग हँस पड़ें।

हज़रत मुसलह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़ाती मक़ाम तो सच के बारे में इतना बाला (बहुत ऊंचा) था कि आप स. की क़ौम ने आप स. का नाम ही सिद्दीक़ रख दिया था।

आप स. अपनी जमाअत को भी सच्चाई पर क़ायम रहने की हमेशा तलक़ीन फ़रमाते थे। आप स. फ़रमाया करते थे कि सच ही नेकी की तरफ़ तवज्जुह दिलाता है और नेकी ही इंसान को जन्नत दिलाती है, और सच का असल मक़ाम यह है कि इंसान सच बोलता चला जाए यहाँ तक कि ख़ुदा के हुज़ूर में भी वो सच्चा समझा जाए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: आज हर अहमदी का काम है कि हम अपने जाइज़े लें कि हमारे सच्चाई के मेयार क्या हैं और जो कमज़ोरियाँ हैं उन्हें हमने दूर करना है।

ख़ुतबे के इख़्तिताम पर हुज़ूर अनवर ने मुहतरमा शाहिदा अहमद साहिबा, अहलिया मिर्ज़ा नसीम अहमद साहब, की नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ाइब पढ़ाने का एलान फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ
وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ
وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْىِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ
وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔